डॉ. हरीन्द्र भूषण जैन
अनेकान्त शोध पीठ
(बाडवली-उज्जैन)

जम्बूद्वीप और आधुनिक भौगोलिक-मान्यताओं का तुलनात्मक विवेचन

(१) जम्बूद्वीप-वैदिक मान्यता

वैदिक लोगों को जम्बूद्वीप का ज्ञान नहीं था। उस समय की भौगोलिक सीमाएँ निम्न प्रकार थीं—पूर्व की ओर ब्रह्मपुत्र नदी तक गंगा का मैदान, उत्तर-पश्चिम की ओर हिन्दुकुश पर्वत, पश्चिम की ओर सिन्धु नदी, उत्तर की ओर हिमालय तथा दक्षिण की ओर विन्ध्यगिरि।

वेद में पर्वत विशेष के नामों में "हिमवन्त" (हिमालय) का नाम आता है। तैत्तिरीय आरण्यक (१।७) में "महामेरु" का स्पष्ट उल्लेख है जिसे कश्यप नामक अष्टम सूर्य कभी नहीं छोड़ता, प्रत्युत सदा उसकी परिक्रमा करता रहता है। इस उल्लेख से प्रो० बलदेव उपाध्याय[1] इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि महामेरु से अभिप्राय "उत्तरी ध्रुव" है।

वेदों में समुद्र शब्द का उल्लेख है, किन्तु पाश्चात्य विद्वानों के मत में वैदिक लोग समुद्र से परिचित नहीं थे। भारतीय विद्वानों की दृष्टि में आर्य लोग न केवल समुद्र से ही अच्छी तरह परिचित थे अपितु समुद्र से उत्पन्न मुक्ता आदि पदार्थों का भी वे उपयोग करते थे। वे समुद्र में लम्बी-लम्बी यात्राएँ भी करते थे तथा सौ दाढ़ों वाली लम्बी जहाज बना लेने की विद्या से भी परिचित थे।[2]

ऐतरेय ब्राह्मण (८/३) में आर्य मण्डल को पांच भागों में विभक्त किया गया है जिसमें उत्तर हिमालय के उस पार उत्तर कुरु और उत्तरमद्र नामक जनपदों की स्थिति थी। ऐतरेय ब्राह्मण (८/१४) के अनुसार कुछ कुरु लोग हिमालय के उत्तर की ओर भी रहते थे जिसे 'उत्तर कुरु' कहा गया हैं।[3]

(२) जम्बूद्वीप—रामायण एवं महाभारतकालीन मान्यता

रामायणीय भूगोल—वाल्मीकि रामायण के बाल, अयोध्या एवं उत्तर काण्डों में पर्याप्त भौगोलिक वर्णन उपलब्ध है, किन्तु किष्किन्धाकाण्ड के ४०वें सर्ग से ४३वें सर्ग तक सुग्रीव द्वारा सीता की खोज में समस्त वानर-नेताओं को वानर-सेना के साथ सम्पूर्ण दिशाओं में भेजने के प्रसंग में तत्कालीन समस्त पृथ्वी का वर्णन उपलब्ध है।

वाल्मीकि ऋषि जम्बूद्वीप, मेरु तथा हिमवान् पर्वत एवं उत्तरकुरु से सुपरिचित थे—

---

१. प्रो० बलदेव उपाध्याय, 'वैदिक साहित्य और संस्कृति', शारदा मन्दिर काशी, १९५५, दशम परिच्छेद, "वैदिक भूगोल तथा आर्य निवास", पृष्ठ ३५५।
२. वही, पृष्ठ ३६२।
३. वही, पृष्ठ ३६४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'उत्तरेण परिक्रम्म जम्बूद्वीपं दिवाकरः ।
देश्यो भवति भूयिष्ठं शिखरं तन्महोच्छ्रमम् ।
—(रामा. ४/४०/५८/५६)

'तेषां मध्ये स्थितौ राजा मेरुरुत्तमपर्वतः ।'
—(रामा. ४/४२/३८)

'अन्वीक्ष्य परदाश्चैव हिमवन्तं विचिन्वय'
— (रामा. ४-४३-१२)

'उत्तराःकुरवस्तत्र कृतपुण्यपरिश्रमाः ।'
—(रामा. ४-४३-२८)

जैन परम्परा में उत्तरकुरु को भोगभूमि कहा गया है। रामायण के तिलक टीकाकार भी उत्तरकुरु को भोगभूमि कहते हैं—

'तत आरम्य उत्तरकुरुदेशस्य भोगभूमित्वकथनम्'
— (रामा० ४-४३-३८ पर तिलक टीका)

जैन साहित्य में भोगभूमि का जैसा वर्णन प्राप्त होता है वैसा ही वर्णन उत्तरकुरु का रामायण के बाईस श्लोकों (४–४३–३८ से ६०) में उपलब्ध है। उनमें से कुछ श्लोक इस प्रकार हैं—

'नित्यपुष्पफलास्तत्र नगाः पत्रस्थाकुलाः ।
दिव्यगन्धरसस्पर्शाः सर्वकामान् स्रवन्ति च ।।
नानाकराणि वासांसि फलन्त्यन्ये नगोत्तमाः ।
सर्वे सुकृतर्माणः सर्वे रतिपरायणाः ।
सर्वे कामार्थसहिता वसन्ति सहयोषितः ।।
तत्र नामुदितः कश्चिन्मात्र कश्चिदातिप्रियः ।
अहन्यहविवर्धन्ते गुणास्तत्र मनोरमाः ।।
—(रामा. ४-४३, ४३-५२)

प्रो० एस० एम० अली, भूतपूर्व अध्यक्ष, भूगोल विभाग, सागर विश्वविद्यालय, रामायणीय—जम्बूद्वीप की स्थिति पृथ्वी के बीच में मानते हैं जो कि भूगोल की जैन परम्परा से पर्याप्त मेल खाती है।[1]

रामायण के किष्किन्धाकाण्ड में जम्बूद्वीप का जो वर्णन उपलब्ध होता है वह इस प्रकार है—

जम्बूद्वीप की पूर्व दिशा में क्रमशः भागीरथी, सरयू आदि नदियाँ, ब्रह्ममाल, विदेह, मगध आदि देश तत्पश्चात् लवणसमुद्र, यवद्वीप (जावा), सुवर्णरूप्यक द्वीप (बोर्नियो), शिशिर पर्वत, शोणनद, लोहित समुद्र, कूटशाल्मली, क्षीरोदसागर, ऋषभपर्वत, सुदर्शन तडाग, जलोद-सागर, कनकप्रभ पर्वत, उदय पर्वत तथा सौमनस पर्वत। इसके पश्चात् पूर्व दिशा अगम्य है। अन्त में देवलोक है।

जम्बूद्वीप के दक्षिण दिशा में क्रमशः विन्ध्यपर्वत नर्मदा, गोदावरी आदि नदियाँ, मेखल, उत्पल, दशार्ण, अवन्ती, विदर्भ, आन्ध्र, चोल, पाण्ड्य, केरल आदि देश, मलय पर्वत, ताम्रपर्णी नदी, महानदी, महेन्द्र, पुष्पितक, सूर्यवान्, वैद्युत एवं कुमार नामक पर्वत, भोगवती नगरी, ऋषभ पर्वत, तत्पश्चात् यम की राजधानी पितृलोक।

जम्बूद्वीप के पश्चिम में क्रमशः सौराष्ट्र, बाह्लीक, चन्द्रचित्र (जनपद), पश्चिम समुद्र, सोमगिरि, पारिमाल, वज्रमहागिरि, चक्रवात तथा वराह (पर्वत) प्राग्ज्योतिषपुर, सर्व सौवर्ण, मेरु एवं अस्ताचल (पर्वत) और अन्त में वरुण लोक।

इसी प्रकार जम्बूद्वीप के उत्तर में क्रमशः हिमवात् (पर्वत) भरत, कुरु, भद्र, कम्बोज, यवन, शक (देश), काल, सुदर्शन, देवसखा, कैलास, क्रौंच, मैनाक (पर्वत), उत्तरकुरु देश तथा सोमगिरि और अंत में ब्रह्मलोक।

महाभारतीय भूगोल—महाभारत के भीष्म आदि, सभा, वन, अश्वमेघ एवं उद्योग पर्वों में भारत का भौगोलिक वर्णन उपलब्ध है। तदनुसार जम्बूद्वीप और क्रौंच द्वीप मेरु के पूर्व में तथा शक द्वीप मेरु के उत्तर में है।

महाभारतीय भूगोल में पृथ्वी के मध्य में मेरु पर्वत है। इसकी उत्तर दिशा में पूर्व से पश्चिम तक

१ श्री एस० एम० अली एफ० एन० आय० 'दि ज्याग्रफी आफ दि पुरान्स,' पीपुल्स पब्लीशिंग हाउस, नई दिल्ली, १९७३, पृष्ठ २१—२३। (संक्षिप्त रूप—'जियो० आफ पुराणास)'।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फैले क्रमशः भद्रवर्ष, इलावर्ष तथा उत्तरकुरु हैं। तत्पश्चात् पुनः उत्तर की ओर क्रमशः नील पर्वत, श्वेत वर्ष, श्वेत पर्वत, हिरण्यक वर्ष, शृंगवान् पर्वत हैं। पश्चात् ऐरावत वर्ष और क्षीर समुद्र है। इसी प्रकार मेरु के दक्षिण में पश्चिम से पूर्व तक फैले हुए केतुमाल वर्ष एवं जम्बूद्वीप हैं। पश्चात् पुनः दक्षिण की ओर क्रमशः निषध पर्वत, हरिवर्ष, हेमकूट या कैलाश, हिमवतवर्ष, हिमालय पर्वत, भारतवर्ष तथा लवण समुद्र है।[1] यह वर्णन जैन भौगोलिक परम्परा के बहुत निकट है।

(३) जम्बूद्वीप—पौराणिक मान्यता

प्रायः समस्त हिन्दू पुराणों में पृथ्वी और उससे सम्बन्धित द्वीप, समुद्र, पर्वत, नदी, क्षेत्र आदि का वर्णन उपलब्ध होता है। पुराणों में पृथ्वी को सात द्वीप-समुद्रों वाला माना गया है। ये द्वीप और समुद्र क्रमशः एक-दूसरे को घेरते चले गये हैं।

इस बात से प्रायः सभी पुराण सहमत हैं कि जम्बूद्वीप पृथ्वी के मध्य में स्थित है और लवण समुद्र उसे घेरे हुए है। अन्य द्वीप समुद्रों के नाम और स्थिति के बारे में सभी पुराण एकमत नहीं हैं। भागवत, गरुड़, वामन, ब्रह्म, मार्कण्डेय, लिंग, कूर्म, ब्रह्माण्ड, अग्नि, वायु, देवी तथा विष्णु पुराणों के अनुसार सात द्वीप और समुद्र क्रमशः इस प्रकार हैं—

१—जम्बूद्वीप तथा लवण समुद्र,
२—प्लक्ष द्वीप तथा इक्षु सागर,
३—शाल्मली द्वीप तथा सुरा सागर,
४—कुशद्वीप तथा सर्पिषु सागर,
५—क्रौंच द्वीप तथा दधिसागर,
६—शक द्वीप तथा क्षीर सागर और
७—पुष्कर द्वीप तथा स्वादु[2] सागर

(४) जम्बूद्वीप—जैन मान्यता

समस्त जैन पुराण, तत्त्वार्थ सूत्र (तृतीय अध्याय), त्रिलोक प्रज्ञप्ति आदि में समस्त विश्व का भौगोलिक वर्णन उपलब्ध होता है। लोक के तीन विभाग किये गये हैं—अधोलोक, मध्यलोक तथा ऊर्ध्वलोक। मेरु पर्वत के ऊपर ऊर्ध्वलोक, नीचे अधोलोक एवं मेरु की जड़ से चोटी पर्यन्त मध्यलोक है।

मध्यलोक के मध्य में जम्बूद्वीप है, जो लवण समुद्र से घिरा है। लवण समुद्र के चारों ओर धातकीखण्ड नामक महाद्वीप है। धातकीखण्ड द्वीप को कालोदधि समुद्र वेष्टित किये हुए है। अनन्तर पुष्करवर द्वीप, पुष्करवर समुद्र आदि असंख्यात द्वीप समुद्र हैं। पुष्करवरद्वीप के मध्य में मानुषोत्तर पर्वत है जिससे इस द्वीप के दो भाग हो गये हैं। अतः जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड द्वीप और पुष्करार्ध द्वीप इन्हें मनुष्य क्षेत्र कहा गया है।

जम्बूद्वीप का आकार थाली के समान गोल है। इसका विस्तार एक लाख योजन है। इसके बीच में एक लाख चालीस योजन ऊँचा मेरु पर्वत है। मनुष्य क्षेत्र के पश्चात् छह द्वीप-समुद्रों के नाम इस प्रकार हैं—वरुणवर द्वीप—वरुणवर समुद्र, क्षीरवर द्वीप—क्षीरवर समुद्र, घृतवरद्वीप-घृतवर समुद्र, इक्षुवरद्वीप-इक्षुवर समुद्र, नन्दीश्वर-द्वीप-नन्दीश्वर समुद्र, अरुणवरद्वीप, अरुणवर समुद्र, इस प्रकार स्वयंभूरमण समुद्र पर्यन्त असंख्यात द्वीप समुद्र हैं।

जम्बूद्वीप के अन्तर्गत सात क्षेत्र, छह कुलाचल और चौदह नदियाँ हैं। हिमवान्, महाहिमवान्, निषध, नील, रुक्मी और शिखरी ये छह कुलाचल हैं। ये पूर्व से पश्चिम तक लम्बे हैं। ये

१ श्री एस० एम० अली, 'दि ज्याग्राफी आफ द पुरान्स' पृ० ३२ तथा पृ० ३२-३३ के मध्य में स्थित, चित्र सं० २ 'दि वर्ल्ड आफ महाभारत—डायनामेटिक'।
२ "जियो ऑफ पुरान्स" पृष्ठ—३८, अध्याय-द्वितीय—"पुराणिक कान्टीनेन्ट्स एण्ड औशन्स"।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिन सात क्षेत्रों को विभाजित करते हैं उनके नाम हैं—भरत, हैमवत, हरि, विदेह, रम्यक, हैरण्यवत और ऐरावत। इन सातों क्षेत्रों में बहने वाली चौदह नदियों के क्रमशः सात युगल हैं, जो इस प्रकार हैं–

गंगा, सिन्धु, रोहित-रोहितास्या, हरित-हरिकान्ता, सीता-सीतोदा, नारी-नरकान्ता, सुवर्णकूला रुप्यकूला तथा रक्ता-रक्तोदा। इन नदी युगलों में से प्रत्येक युगल की पहली-पहली नदी पूर्व समुद्र को जाती है और दूसरी-दूसरी नदी पश्चिम समुद्र को।

भरत क्षेत्र का विस्तार पाँच सौ छब्बीस सही छह बटे उन्नीस योजन है। विदेह पर्यन्त पर्वत और क्षेत्रों का विस्तार भरतक्षेत्र के विस्तार से दूना-दूना है। उत्तर के क्षेत्र और पर्वतों का विस्तार दक्षिण के क्षेत्र और पर्वतों के समान हैं।

जम्बूद्वीप के अन्तर्गत देवकुरु और उत्तरकुरु नामक दो भोगभूमियाँ हैं। उत्तरकुरु की स्थिति सीतोदा नदी के तट पर है। यहाँ निवासियों की इच्छाओं की पूर्ति कल्पवृक्षों से होती है। इनके अतिरिक्त हैमवत, हरि, रम्यक तथा हैरण्यवत क्षेत्र भी भोगभूमियाँ हैं। शेष भरत, ऐरावत और विदेह (देवकुरु और उत्तरकुरु को छोड़कर) कर्म-भूमियाँ हैं।

भरतक्षेत्र हिमवान् कुलाचल के दक्षिण में पूर्व-पश्चिमी समुद्रों के बीच स्थित है। इस क्षेत्र में सुकोशल, अवन्ती, पुण्ड्र, अश्मक, कुरु, काशी, कलिंग, बंग, अंग, काश्मीर, वत्स, पांचाल, मालव, कच्छ, मगध, विदर्भ, महाराष्ट्र, सौराष्ट्र, कोंकण, आन्ध्र, कर्नाटक, कौशल, चोल, केरल, शूरसेन, विदेह, गान्धार, काम्बोज, बाल्हीक, तुरुष्क, शक, कैकय आदि देशों की रचना मानी गई है।[1]

(५) जम्बूद्वीप—प्राचीन एवं आधुनिक भौगोलिक मान्यताओं का तुलनात्मक विवेचन

(क) सप्तद्वीप—विष्णु पुराण, मत्स्य पुराण वायुपुराण और ब्रह्माण्ड पुराण प्रभृति पुराणों में सप्तद्वीप और सप्तसागर वसुन्धरा का वर्णन आया है। वह वर्णन जैन हरिवंश पुराण और आदि-पुराण की अपेक्षा बहुत भिन्न है। महाभारत में तेरह द्वीपों का उल्लेख है। जैन मान्यतानुसार प्रतिपादित असंख्य द्वीप-समुद्रों में जम्बू, क्रौंच और पुष्कर द्वीप के नाम वैदिक पुराणों में सर्वत्र आए हैं।

समुद्रों के वर्णन के विष्णु पुराण में जल के स्वाद के आधार पर सात समुद्र बतलाए हैं। जैन परम्परा में भी असंख्यात समुद्रों को जल के स्वाद के आधार पर सात ही वर्गों में विभक्त किया गया है। लवण, सुरा, घृत, दुग्ध, शुभोदक, इक्षु और मधुर जल। इन सात वर्गों में समस्त समुद्र विभक्त हैं। विष्णु पुराण में 'दधि' का निर्देश है, जैन परम्परा में इसे 'शुभोदक' कहते हैं। अतः जल के स्वाद की दृष्टि में सात प्रकार का वर्गीकरण दोनों ही परम्पराओं में पाया जाता है।

जिस प्रकार वैदिक पौराणिक मान्यता में अन्तिम द्वीप पुष्करवर है, उसी प्रकार जैन मान्यता में भी मनुष्य लोक का सोपान वही पुष्करार्ध हैं। तुलना करने से प्रतीत होता है कि मनुष्य लोक की सीमा मानकर ही वैदिक मान्यताओं में द्वीपों का कथन किया गया है। इस प्रकार जैन परम्परा में मान्य जम्बू, धातकी और पुष्करार्ध, इन ढाई द्वीपों में वैदिक परम्परा में मान्य सप्तद्वीप समाविष्ट हो जाते हैं। यद्यपि क्रौंच द्वीप का नाम दोनों मान्यताओं में समान रूप से आया है, पर स्थान निर्देश की दृष्टि से दोनों में भिन्नता है।[2]

१ डा० नेमिचन्द्र शास्त्री—"आदिपुराण में प्रतिपादित भारत", गणेशप्रसाद वर्णी ग्रन्थमाला वाराणसी, १९६८, पृष्ठ ३६–६४; आदिपुराण में; प्रतिपादित भूगोल प्रथम परिच्छेद तथा तत्त्वार्थसूत्र की सर्वार्थसिद्धि टीका, सम्पादक पं० फूलचन्द्र शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, १९६५, तृतीय अध्याय, पृष्ठ २११-२२२।

२ डा० नेमिचन्द्र शास्त्री 'आदिपुराण में प्रतिपादित भारत', पृष्ठ ३९–४०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बौद्ध परम्परा में केवल चार द्वीप माने गए हैं। समुद्र में एक गोलाकार सोने की थाली पर स्वर्णमय सुमेरुगिरि स्थित हैं। सुमेरु के चारों ओर सात पर्वत और सात समुद्र हैं। इन सात स्वर्णमय पर्वतों के बाहर क्षीरसागर है और क्षीरसागर में चार द्वीप अवस्थित हैं—कुरु, गोदान, विदेह और जम्बू। इन द्वीपों के अतिरिक्त छोटे-छोटे और भी दो हजार द्वीप हैं।[1]

आधुनिक भौगोलिक मान्यता

पौराणिक सप्तद्वीपों की आधुनिक भौगोलिक पहचान (Identification) तथा स्थिति के विषय में दो प्रकार के मत पाए जाते हैं। प्रथम मत के अनुसार सप्तद्वीप (जम्बू, प्लक्ष, शाल्मली, कुश, क्रौंच, शक तथा पुष्कर) क्रमशः आधुनिक वह महाद्वीप—एशिया, योरोप, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, उत्तरी अमेरिका तथा दक्षिणी अमेरिका एवं एण्टार्कटिका (दक्षिणी ध्रुव प्रदेश) का प्रतिनिधित्व करते हैं।

द्वितीय मत के अनुसार ये सप्तद्वीप पृथ्वी के आधुनिक विभिन्न प्रदेशों के पूर्वरूप हैं। इसमें भी तीन मत प्रधान हैं।

(क) जम्बू (इण्डिया), प्लक्ष (अराकान तथा वर्मा), कुश (सुन्द आर्चीपिलागो), शाल्मली (मलाया प्रायद्वीप), कौंच (दक्षिणी इण्डिया), शक (कम्बोज) तथा पुष्कर (उत्तरी चीन तथा मंगोलिया)।[2]

(ख) जम्बू (इण्डिया), कुरु (ईरान), प्लक्ष (एशिया माइनर), शाल्मली (मध्य योरोप), क्रौंच (पश्चिम योरोप), शक (ब्रिटिश द्वीप समूह) तथा पुष्कर (आईसलैण्ड)।[3]

(ग) जम्बू (इण्डिया), कौंच (एशिया माइनर), गोमेद (कोम डी टारटरी—Kome die Tartary), पुष्कर (तुर्किस्तान), शक (सीथिया), कुश (ईरान, अरेबिया तथा इथियोपिया), प्लक्ष (ग्रीस) तथा शाल्मली (सरमेटिया Sarmatia)[4]

किन्तु प्रसिद्ध भारतीय भूगोलशास्त्री डा० एस० एम० अली उपर्युक्त चारों मतों से सहमत नहीं हैं। पुराणों में प्राप्त तत्तत्प्रदेश की आवहना (climate) तथा वनस्पतियों (Vegetation) के विशेष अध्ययन से सप्त द्वीपों की आधुनिक पहचान के विषय में वे जिस निष्कर्ष पर पहुँचे वह इस प्रकार है—

जम्बूद्वीप (भारत), शक द्वीप (मलाया, श्याम, इण्डो-चीन, तथा चीन का दक्षिण प्रदेश), कुश द्वीप (ईरान, ईराक), प्लक्ष द्वीप (भूमध्यसागर का पठार), पुष्करद्वीप (स्कैण्डिनेवियन प्रदेश, फिनलैंड, यूरोपियन रूस का उत्तरी प्रदेश तथा साइबेरिया) शाल्मली द्वीप (अफ्रीका, ईस्ट-इंडीज, मेडागास्कर) तथा क्रौञ्च द्वीप (कृष्ण सागर का कछार)।[5]

(ख) मेरु पर्वत—जैन परम्परा में मेरु को जम्बूद्वीप की नाभि कहा है—'तन्मध्ये मेरुर्नाभिर्वृतो योजनशतसहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः' (तत्त्वार्थ सूत्र ३/६) अर्थात् मेरु, जम्बूद्वीप के बिल्कुल मध्य में है। इसकी ऊंचाई १ लाख ४० योजन है। इसमें से एक हजार योजन जमीन में है, चालीस योजन की अन्त में चोटी है और शेष निन्यानवे हजार योजन समतल से चूलिका तक है। प्रारम्भ में जमीन पर मेरु पर्वत का व्यास दस हजार योजन है जो ऊपर

---

१ एच० सी० रायचौधरी—"स्टडीज इन इण्डियन एण्टीक्वीटीज, ६६, पृष्ठ ५।

२ कौल० गिरिनी—'रिसर्चेज आन पेटोलेमीज' ज्याग्राफी आफ ईस्टर्न एशिया (१६०६), पृष्ठ ७२५।

३ एफ० विल्फोर्ड—'एशियाटिक रिसर्चेज' वाल्यू० ८, पृष्ठ २६७–३४६।

४ वी० वी० अय्यर—'द सेवन द्विपाज आफ द पुरान्स'—द क्वाटरली जनरल आफ दि मिथीकल सोसायटी (लन्दन), वाल्यूम—१५, नं० १, पृ० ६२, नं० २, पृ० ११६–१२७, नं० ३, पृ० २३८–४५, वा० १ नं० ४, पृ० २७३-८२।

५ डा० एस० एम० अली, 'जिओ आफ पुरान्स', पृ० ३६-४६ (अध्याय २ पुरानिक कान्टीनेन्ट्स एण्ड ओशन्स)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रम से घटता गया है। मेरु पर्वत के तीन काण्ड हैं। प्रत्येक काण्ड के अन्त में एक-एक कटनी है। यह चार वनों से सुशोभित हैं—एक जमीन पर और तीन इन तीन कटनियों पर। इनके क्रम से नाम हैं—भद्रशाल, नन्दन, सौमनस और पाण्डुक। इन चारों वनों में, चारों दिशाओं में एक-एक वन में चार-चार इस हिसाब से सोलह चैत्यालय हैं। पाण्डुकवन में चारों दिशाओं में चार पाण्डुक शिलाएँ हैं, जिन पर उस दिशा के क्षेत्रों में उत्पन्न हुए तीर्थंकरों का अभिषेक होता है। इसका रंग पीला है।[1]

वेदों में मेरु नहीं है। तैत्तिरीय आरण्यक (१-७-१-३) में 'महामेरु' है किन्तु इसकी पहचान के बारे में कुछ भी उल्लेख नहीं है। रामायण, महाभारत, बौद्ध एवं जैन आगम साहित्य में इसके परिमाण तथा स्थान के बारे में प्रायः एक जैसे ही कथन उपलब्ध हैं।

परशियन, ग्रीक, चायनीज, ज्यूज तथा अरबी लोग भी अपने-अपने धर्मग्रन्थों में मेरु का वर्णन करते हैं। नाम एवं स्थान आदि के विषय में भेद होते हुए भी केन्द्रीय विचारधारा वही है जैसा हिन्दू-पुराणों में इसका वर्णन है। जोरोस्ट्रियन धर्मग्रन्थ के अनुसार अल-बुर्ज (Al-Burj) नामक पर्वत ने ही पृथ्वी के समस्त पर्वतों को जन्म दिया और इसी से विश्व को जल से आप्लावित करने वाली नदियां निकलीं। यही अल-बुर्ज मेरु है। चाइनीज लोगों का विश्वास है कि 'त्सिग लिंग' (Tsing-Ling) ही मेरु पर्वत है। इसी से विश्व के समस्त पर्वत और नदियां निकलीं।

मेरु के परिमाण और आकार के विषय में विष्णुपुराण में उल्लेख है कि सभी द्वीपों के मध्य में जम्बूद्वीप है और जम्बूद्वीप के मध्य में स्वर्ण गिरि मेरु है। इसकी समस्त ऊँचाई एक लाख योजन है, जिसमें से १६ हजार योजन पृथ्वी के नीचे और चौरासी हजार योजन पृथ्वी के ऊपर है। चोटी पर उसका घेरा बतीस हजार योजन तथा मूल में सोलह हजार योजन है, अतः इसका आकार ऐसा प्रतीत होता है मानो यह पृथ्वी रूपी कमल का 'कमलगट्टा' (Seedcup) हो। पद्म-पुराण के अनुसार इसका आकार धतूरे के पुष्प जैसा घण्टे के आकार (Bell shape) का है। वायु-पुराण के अनुसार चारों दिशाओं में फैली इसकी शाखाओं के वर्ण पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर में क्रमशः श्वेत, पीत, कृष्ण और रक्त है। सीलोन के बुद्धिष्ट लोगों के अनुसार मेरु का घेरा सर्वत्र एक जैसा है। नेपाली परम्परा के अनुसार मेरु का आकार ढोल जैसा है।[2]

आधुनिक भौगोलिक मान्यता

मेरु की उपर्युक्त स्थिति को ध्यान में रखते हुए अब हमें उसके वर्तमान स्वरूप और स्थान के विषय में विचार करना चाहिए।

हिमालय तथा उसके पार के क्षेत्र (Himalayan and Trans-Himalayan Zone) में पांच उन्नत प्रदेश हैं। पुराणों में प्राप्त मेरु के विवरण के आधार पर, इन उन्नत प्रदेशों की तुलना मेरु से की जा सकती है। ये प्रदेश हैं :

१. कराकोरम (Kara-Koram) पर्वत शृंखलाओं से घिरा क्षेत्र,

२. धौलगिरि (Dhaulgiri) पर्वत शृंखलाओं से घिरा क्षेत्र,

३. एवरेस्ट (Everest) पर्वत शृंखलाओं से घिरा क्षेत्र,

४. हिमालय आर्क्स (Himalayan Arcs) तथा कुन-लुन (Kun-lun) पर्वत से घिरा हुआ तिब्बत का पठार, तथा

५. हिन्दूकुश (Hindukush) कराकोरम, टीन

---

१ सर्वार्थसिद्धि' भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, तृतीय अध्याय, पृष्ठ २१९-२२२

२ डा० एस० एम० अली—जिओ आफ पुरान्स अध्याय—३ (दि माउन्टेन सिस्टम आफ दि पुरान्स पृष्ठ—४७-४८।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शान (Tien shan) तथा एलाइपार पर्वत शृंखला (Trans Ali system) की बर्फ से ढकी चोटियों से घिरा पामीर का उन्नत पठार।

इन पांचों उन्नत प्रदेशों में से 'पामीर के पठार' से मेरु की तुलना करना और भी अधिक सही और युक्तयुक्त प्रतीत होता है। पामीर और मेरु में नाम का भी सादृश्य है। पा=मीर=मेरु।

यदि पामीर के पठार से मेरु की तुलना सही है तो पुराणों में प्रतिपादित जम्बूद्वीप के पार्श्ववर्ती प्रधान पर्वतों की भी पहिचान की जा सकती है।

पुराणों के अनुसार मेरु के उत्तर में तीन पर्वत हैं—नील, श्वेत (जैन परम्परा के अनुसार "रुक्मी") और शृंगवान् (जै० प० शिखरी) ये तीनों पर्वत, रम्यक, हिरण्मय (जै० प० हैरण्यवत्) तथा कुरु (जै० प० ऐरावत्)क्षेत्रों के सीमान्त पर्वत हैं। इसी प्रकार मेरु के दक्षिण में भी तीन पर्वत हैं—निषध, हेमकूट (जै० प० महाहिमवान्) तथा हिमवान् (ये तीनों पर्वत) हिमवर्ष (जै. म. हरि) किम्पुरुष (जै० प० हेमवत) और भारतवर्ष (जै० प० भरत) क्षेत्रों के सीमान्त पर्वत हैं। ये छहों पर्वत पूर्व और पश्चिम में लवण समुद्र तक फैले हैं।

इन सभी पर्वतों की तुलना वर्तमान भूगोल से इस प्रकार की जा सकती है :

१. शृंगवान् (शिखरी) की कराताउ—किरगीज वर्तमान पर्वत शृंखला (Kara Tau Kirghis Ketman Chain) है।

२. श्वेत (रुक्मी) की नूरा ताउ-तुर्किस्तान-अतबासी पर्वत शृंखला (Nura Tau-Turkistan Atbasi Chain) से,

३. नील का जरफशान-ट्रान्स-आलाइ-टीनशान पर्वत शृंखला से, (Zarafshan-Trans Alei Tienshan Chain)।

४. निषध की हिन्दुकुश तथा कुनलुन पर्वत शृंखला से।

५. हेमकूट (महाहिमवान्) की लद्दाख-कैलाश-ट्रान्स हिमालयन पर्वत शृंखला (Laddakh-Kailash-Trans-Himalayan chain) से, तथा

६. हिमवान् की हिमालय पर्वत शृँखला (Great Himalayan Range) से।[1]

(ग) **जम्बूद्वीप**— जैसा कि हम पहले कह चुके हैं, पुराणों में मेरु (पामीर) के उत्तर में क्रमशः तीन पर्वतमालाएँ हैं जो पूर्व-पश्चिम लम्बी है— नील, जो कि मेरु के सबसे निकट और सबसे लम्बी पर्वत माला है, श्वेत, जो कि नील से कुछ छोटी और उससे उत्तर की ओर आगे है, तथा अन्तिम शृंगवान्, जो कि सबसे छोटी तथा श्वेत से उत्तर की ओर आगे है।

जैन परम्परा के अनुसार भी मेरु के उत्तर में तीन वर्षधर पर्वत है—नील, रुक्मी और शिखरी। दोनों (जैन-वैदिक) परम्पराओं में केवल नील पर्वतमाला का ही नाम सादृश्य नहीं है, अपितु रुक्मी (श्वेत) और शिखरी (शृंगवान्) पर्वतमाला का भी नाम सादृश्य है। इन पर्वतों की आधुनिक भौगोलिक तुलना हम विभिन्न पर्वतमालाओं से कर चुके हैं।

इन पर्वतमालाओं तथा उत्तरी समुद्र (आर्कटिक ओशन) अर्थात् लवण समुद्र के बीच क्रमशः नील और श्वेत (रुक्मी) के बीच रम्यक या रमणक (जैन परम्परा में रम्यक) वर्ष, श्वेत और शृंगवान् (जै० प० में शिखरी) के बीच हिरण्मय या हिरण्यक (जै० प० में हैरण्यमान्) तथा शृंगवान (जैन पर० में ऐरावत) नाम के वर्ष क्षेत्र है।[2]

जम्बूद्वीप का उत्तरी क्षेत्र

सबसे पहले हम रम्यक क्षेत्र को लेते हैं। जैन परम्परा में भी इसका नाम रम्यक-वर्ष-क्षेत्र है। इसके दक्षिण में नील तथा उत्तर में श्वेत पर्वत है। हमारी पहचान के अनुसार नील, नूर ताउ—तुर्किस्तान पर्वत मालाएँ है और श्वेत, जरफसान—हिसार पर्वत मालाएँ हैं।

---

१ डा० एस० एम० अली 'जिओ० आफ पुरान्स'' पृ० ५० से ५८ तक।

२ डा० एस० एम० अली—''जिओ० आफ पुरान्स'' अध्याय-५, 'रीजन्स आफ जम्बूद्वीप—नार्दन रीजन्स पृष्ठ ७३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यह प्रसिद्ध है कि एशिया के भू-भाग में अति प्राचीनकाल में दो राज्यों की स्थापना हुई थी—आक्सस नदी (Oxus River) के कछार में बैक्ट्रिया (Bactria) तथा जरफसान नदी और कशका दरिया (River Jarafshan and Kaska Daria) के कछार में सोगदियाना (Sogdiana) राज्य आज से २५०० या २००० वर्ष पूर्व ये दोनों राज्य अत्यन्त घने रूप से बसे थे। यहाँ के निवासी उत्कृष्ट खेती करते थे। यहाँ नहरें थीं। व्यापार और हस्तकला कौशल में भी ये राज्य प्रवीण थे।

ऐसा कहा जाता है कि "समरकन्द" की स्थापना ३००० ई० पू० हुई थी। अतः "सोगदियाना" को हम मानव संस्थिति का सबसे प्राचीन संस्थान कह सकते हैं। "सोगदियाना" का नील और श्वेत पर्वतमालाओं से तथा पड़ौसी राज्य, बैक्ट्रिया (केतुमाल) जिसका आगे वर्णन करेंगे, से विशेष सम्बन्धों पर विचार करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि पौराणिक "रम्यक" वर्ष प्राचीनकाल का "सोगदियाना" राज्य है। बुखारा का एक जिला प्रदेश, जिसका एक नाम "रोमेतन" (Rometan) है, सम्भवतः "रम्यक" का ही अपभ्रंश है।

दूसरा क्षेत्र जो कि श्वेत और शृंगवान् पर्वतमालाओं के मध्य स्थित है, हिरण्यवत् है। हिरण्यवत् का अर्थ है सुवर्णमाला प्रदेश। जैन परम्परा में इसे "हैरण्यवत्" कहा गया है। इस क्षेत्र में बहने वाली नदी का पौराणिक नाम है "हिरण्यवती"। आधुनिक जरफशान नदी इसी प्रदेश में बहती है। जैन परम्परा के अनुसार इस नदी का नाम सुवर्णकूला है। यह एक महत्वपूर्ण बात है कि हिरण्यवती, सुवर्णकूला और जरफशान तीनों के लगभग एक ही अर्थ है—हिरण्यवती का अर्थ है—जहाँ सुवर्ण प्राप्त हो, सुवर्णकूला अर्थ है—जिसके तट पर सुवर्ण हो और जरफशान का अर्थ है—सुवर्ण को फैलाने वाली (Scatterer of Gold)।

तृतीय क्षेत्र, जो कि शृंगवान् पर्वत के उत्तर में है, उत्तारकुरु है। जैन परम्परा में इसे ऐरावत पर्वत कहा गया है। यह प्रदेश आधुनिक ईर्टिश (Irtish) दी औब (The Ob) इशीम (Ishim) तथा टोबोल (Tobol) नदियों का कछार प्रदेश है। दूसरे शब्दों में आधुनिक भौगोलिक वर्गीकरण के अनुसार यह क्षेत्र साइबेरिया का पश्चिमी प्रदेश है।

इस प्रकार जम्बूद्वीप का यह उत्तरी क्षेत्र एक बहुत लम्बे प्रदेश को घेरता है जो कि उराल पर्वत और कैस्पियन सागर से लेकर येनीसाइ नदी (Yenisai River U.S.S.R.) तक तथा तुर्किस्तान टीन शान पर्वतमाला से लेकर आर्कटिक समुद्रतट तक जाता है।[1]

जम्बूद्वीप का पश्चिमी क्षेत्र–केतुमाल

मेरु (पामीर्स) का पश्चिम प्रदेश केतुमाल है। जैन भूगोल के अनुसार यह विदेह का पश्चिम भाग है। इसके दक्षिण में निषध और उत्तर में नील पर्वत है। निषध पर्वत को आधुनिक भूगोल के अनुसार हिन्दूकुश तथा कुनलुन पर्वतमाला (Hindu-Kush Kunlun) माना गया है। यह केतुमाल प्रदेश चक्षुनदी (Oxus River) तथा आमू दरिया का कछार है। इसके पश्चिम में कैस्पियन सागर (Caspian Sea) है जिसमें आल्पस नदी अकार मिलती है। उसके उत्तर-पश्चिम में तुरान का रेगिस्तान है। इस प्रदेश को हिन्दू पुराण में इलावर्त कहा गया है। इस प्रदेश में सीतोदा नदी बहती है। इसी प्रदेश में बैक्ट्रिया राज्य था जिसे हम पहले कह चुके हैं।[2]

---

१. डा० एस० एम० अली—जिओ० आफ पुरान्स पृष्ठ ८३-८७ (अध्याय पंचम रीजन्स आफ जम्बूद्वीप, नार्दन रीजन्स—रमणक, हिरण्यमय एण्ड उत्तरकुरु)

२. वही पृष्ठ ८८-९८ (अध्याय ६, रीजन्स आफ जम्बूद्वीप केतुमाल)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जम्बूद्वीप का पूर्वी क्षेत्र—भद्रवर्ष

मेरु के पूर्व का यह प्रदेश भद्रवर्ष के नाम से हिन्दू पुराणों में कहा गया है। जैन भूगोल के अनुसार यह विदेह का पूर्वी भाग है। इसके उत्तर में नील (Tien Shan Range) तथा दक्षिण में निषध (Hindu Kush-Kunlun) पर्वतमाला है। इसके पश्चिम में देवकूट और पूर्व में पूर्व समुद्र है।

आधुनिक भूगोल के अनुसार यह प्रदेश तरीम तथा ह्वांगहो (Tarim and Hwang-Ho) नदियों कछार है। दूसरे शब्दों में सम्पूर्ण सिक्यिांग (Sikiang) तथा उत्तर-चीन प्रदेश इसमें समाविष्ट है। यहाँ सीता नदी बहती है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि इस भद्रवर्ष (पूर्वविदेह) प्रदेश के अन्तर्गत उत्तारी चीन, दक्षिणी चीन तथा त्सिग लिंग (Tsing Ling) पर्वत का दक्षिणी भाग आता है। यहाँ के निवासी पीत वर्ण के हैं।

आधुनिक भूगोल के अनुसार इस नदी का नाम किजिल सू (Kizil-Su) है।[1]

जम्बूद्वीप का दक्षिणी क्षेत्र

जम्बूद्वीप के दक्षिण प्रदेश का वर्णन मेरु के प्रसंग में दिया जा चुका है। तदनुसार मेरु (पामीर) के दक्षिण में निषध, हेमकूट (जैन परम्परा में महाहिमवान्) तथा हिमवान् पर्वत है और इन पर्वतों से विभाजित क्षेत्र के नाम हैं, क्रमशः हिमवर्ष (जैन परम्परा में हरि) किम्पुरुष (जैन परम्परा में हैमवत) और भारतवर्ष (जैन परम्परा में भरत)।

यह सभी प्रदेश मेरु (पामीर्स) से लेकर हिन्द महासागर तक का समझना चाहिए। भारत के दक्षिण तथा पूर्व-पश्चिम में जो क्रमशः हिन्द महासागर एवं प्रशान्त तथा अरब सागर हैं वहीं लवण समुद्र है।

(घ) जम्बूद्वीप और भारतवर्ष : पौराणिक इतिहास—विष्णुपुराण (२-१) के अनुसार स्वयंभू मनु के दो पुत्र थे प्रियव्रत और उत्तानपाद। प्रियव्रत ने समस्त पृथ्वी के सात भाग (सप्तद्वीप) करके उन्हें अपने सात पुत्रों में बाँट दिया—

अग्नीध्र को जम्बूद्वीप, मेधातिथि को प्लक्ष, अमुष्यत् को शालमली, ज्योतिष्मत् को कुश, पुलिमत् को क्रौंच, मध्व को शक और शबल को पुष्कर द्वीप।

जम्बूद्वीप के राजा अग्नीध्र के नौ पुत्र थे। उन्होंने जम्बू देश के नौ भाग करके उन्हें अपने नौ पुत्रों में बाँट दिया—हिमवन् का दक्षिण भाग हिम (भारतवर्ष) नाभि को दिया। इसी प्रकार हेमकूट सिम्पुरुष को, निषध हरिवर्ष को, मेरु के मध्य वाला भाग इलावृष को, इस प्रदेश और नील पर्वत के मध्य वाला भाग राय को, इसके उत्तर वाला श्वेत प्रदेश हिरण्यवत को, श्रृंगवान् पर्वत से घिरा श्वेत का उत्तर प्रदेश कुरु को, मेरु के पूर्व का प्रदेश भद्र को तथा गन्धमादव एवं मेरु के पश्चिम का प्रदेश केतुमाल को दिया।

नाभि के सौ पुत्र थे उनमें ज्येष्ठ भरत थे। नाभि ने अपने प्रदेश "हिम" अर्थात् भारतवर्ष को नौ भागों में विभक्त करके अपने को पुत्रों बाँट दिया। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार भारतवर्ष के ये नौ भाग इस प्रकार है—इन्द्रद्वीप, ताम्रपर्ण, मतिमान्, नाव द्वीप, सौम्य, गन्धर्व, वरुण तथा कुमारिका या ब्यारी।

जैन परम्परा के अनुसार नाभि और मरुदेवी के पुत्र, ऋषभ, प्रथम युगपुरुष थे। उन्होंने विश्व को असि, मसि, कृषि, कला, वाणिज्य और शिल्प रूप संस्कृति प्रदान की। उनके एक सौ एक पुत्र थे। इनमें भरत और बाहुबली प्रधान थे। संसार

---

१. डा. एस. एम. अली, "जिओ० आफ पुरान्स" पृ० ६६-१०८, अध्याय-७, रीजन्स ऑफ जम्बूद्वीप भाद्रवर्ष।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से विरत होकर दीक्षा ग्रहण करने से पूर्व ऋषभ ने सम्पूर्ण पृथ्वी का राज्य अपने समस्त पुत्रों को बांट दिया। बाहुबली को पोतनपुर का राज्य मिला। भरत चक्रवर्ती सम्राट हुए जिनके नाम से यह भारतवर्ष प्रसिद्ध हुआ।

इस पौराणिक आख्यान से तीन बातें स्पष्टतः प्रतीत होती हैं—

(अ) किसी एक मूल स्रोत से विश्व की मानव जाति का प्रारम्भ हुआ। यह बात आधुनिक विज्ञान की उस मोनोजेनिस्ट थ्योरी (Monogenist theory) के अनुसार सही है जो मानती है कि मनुष्य जाति के विभिन्न प्रकार प्राणिशास्त्र की दृष्टि से एक ही वर्ग के हैं।

(ब) किसी एक ही केन्द्रीय मूल स्रोत से निकलकर सात मानव समूहों ने सात विभिन्न भागों को व्याप्त कर स्वतन्त्र रूप से पृथक्-पृथक् मानव सभ्यता का विकास किया। यह सिद्धान्त भी आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संभव है जिसमें कहा गया है कि विश्व की प्राथमिक जातियों ने पृथ्वी के विभिन्न वातावरणों वाले सात प्रदेशों को व्याप्त कर तत्तत्प्रदेशों के वातावरण के प्रभाव में अपनी शारीरिक विशिष्ट–आकृतियों का विकास किया।

(स) पश्चात् पृथ्वी के इन सात भागों में से एक भाग में (पुराणों के अनुसार जम्बूद्वीप में) नौ मानव समूहों में जो नौ प्रदेशों को व्याप्त किया उनमें भारतवर्ष भी एक है।[1]

(ङ) **भारतवर्ष**—भारतवर्ष से प्रायः इण्डिया उपमहाद्वीप जाना जाता है। किन्तु प्राचीन विदेशी साहित्य में इस इण्डिया उपमहाद्वीप के लिए कोई एक नाम नहीं है।

वैदिक आर्यों ने पंजाब प्रदेश को 'सप्तसिंधव' नाम दिया। बोधायन और मनु के समय में आर्यों ने इस क्षेत्र को 'आर्यावर्त' नाम दिया। डेरियस (Darius) तथा हेरोडोट्स (Herodotus) ने सिन्धु घाटी तथा गंगा के ऊपरी प्रदेश को 'इण्ड' या 'इण्डू' (हिन्दू) नाम दिया। कात्यायन और मेगास्थनीज ने सुदूर दक्षिण में पांड्य राज्य तक फैले सम्पूर्ण देश का वर्णन किया है। रामायण तथा महाभारत भी पाण्ड्य राज तथा बंगाल की खाड़ी तक फैले भारतवर्ष का वर्णन करते हैं।

अशोक के समय में भारत की सीमा उत्तर-पश्चिम में हिन्दकुश तक और दक्षिण-पूर्व में सुमात्रा-जावा तक पहुँच गई थी। कनिंघम ने उस समस्त प्रदेश को विशाल भारत (Greater India) नाम दिया और भारतवर्ष के नवद्वीपों से उसकी समानता स्थापित की।[2]

इस प्रकार आधुनिक भौगोलिक मान्यताओं के अनुसार जम्बूद्वीप का विस्तार उत्तर में साइबेरिया प्रदेश (आर्कटिक ओशन) दक्षिण में हिन्द महासागर और उसके द्वीपसमूह, पूर्व में चीन-जापान (प्रशान्त महासागर) तथा पश्चिम में कैस्पियन सागर तक समझना चाहिये।

अन्त में हम प्रसिद्ध भूगोलशास्त्रवेत्ता, सागर विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष प्रो० एस० एम० अली के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करना, कर्त्तव्य समझते हैं जिनके खोजपूर्ण ग्रन्थ, 'दि ज्याग्राफी आफ द पुरान्स' से हमें इस निबन्ध के लेखन में पर्याप्त सहायता प्राप्त हुई।

१. डा० एस. एम. अली, 'जिओ० आफ पुरान्स' पृष्ठ—६-१० (प्रस्तावना)
२. डा० एस. एम. अली, 'जिओ आफ पुरान्स' पृष्ठ—१२६ अध्याय अष्टम, 'भारतवर्ष-फिजिकल'।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org